Dr. Vandana Suman
Professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara

UG - SEMESTER - VI
MJC-11 : Contemporary Indian Philosophy

"S. Radhakrishnan" Concept of Absolute

JAN - 2017
01 JANUARY • SUNDAY
001-364 • WK53

समकालीन भारतीय दर्शन के इतिहास में डॉ॰ राधाकृष्णन् का एक महत्वपूर्ण स्थान है। समकालीन भारतीय विचारकों का इन्हें प्रतिनिधि कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। भारतीय बुद्धिजीवियों के ऊपर इनका एक तरह से आधिपत्य है क्योंकि उनपर इनका अत्यधिक प्रभाव पड़ा है।

ईश्वर तथा निरपेक्ष सत (Absolute) की समस्या पर राधाकृष्णन वेदान्त से बहुत अधिक प्रभावित हैं। भारतीय दर्शन में ब्रह्म तथा ईश्वर की समस्या को मुख्य रूप से वेदान्त दर्शन में उठाया गया है। राधाकृष्णन यह स्वीकार करते हैं कि शंकर तथा रामानुज वेदान्त दर्शन के दो प्रमुख आचार्य हैं और जो दोनों की अलग-अलग विशेषताएँ हैं वे ही एक दूसरे के दोष हैं।

राधाकृष्णन शंकर तथा रामानुज के निरपेक्ष सत्ता संबंधी विचार को स्वीकार करते हैं। शंकर के ब्रह्म-संबंधी विचार को उन्होंने निरपेक्ष सत्ता का विचार माना है और रामानुज के ब्रह्म संबंधी विचार को ईश्वर का विचार माना है। इनके अनुसार निरपेक्ष सत्ता ही वह मूलतत्व है जो पूर्ण रूप से आध्यात्मिक है तथा जिसके आधार पर सम्पूर्ण विश्व की व्याख्या की जा सकती है।

राधाकृष्णन का कहना है कि Absolute के अन्तर्गत असंख्य एवं अनन्त संभावनाएँ हैं और यह विश्व उन्हीं संभावनाओं में से एक की वास्तविक अभिव्यक्ति है। फिर भी यह उनके लिए अनिवार्य नहीं है क्योंकि यह अभिव्यक्ति एक स्वतंत्र क्रिया है। राधाकृष्णन के अनुसार जब हम, Absolute

है। का व्यवहार, विश्व से सतह के रूप में करते हैं तो यह ईश्वर हो जाता है। वे कहते हैं
" God the absolute with reference to the possibility of which He is the source and creator."

राधाकृष्णन का कहना है कि यद्यपि यह विश्व Absolute के विशिष्ट संभावनाओं की एक निश्चित अभिव्यक्ति है और विश्व के संदर्भ में ईश्वर Absolute है। परन्तु ईश्वर को Absolute के रूप में नहीं स्वीकार किया जा सकता है।

यहाँ हम राधाकृष्णन तथा शंकर और ब्रैडले के विचारों में एक स्पष्ट भेद पाते हैं। शंकर और ब्रैडले ईश्वर को Absolute का केवल एक आकृति मात्र मानते हैं परंतु राधाकृष्णन के अनुसार ईश्वर भी Absolute के अनुरूप ही सत्य है।

राधाकृष्णन के अनुसार Absolute कालहीन है क्योंकि काल की उत्पत्ति विश्व की उत्पत्ति के साथ हुई है। यह विश्व चूंकि विभिन्न घटनाओं का कुल योग है, अतः यह काल के अन्तर्गत है। यह घटनाओं का विकास प्रतिछाया मात्र नहीं है, यह वास्तविक है। यहाँ भी हम शंकर और राधाकृष्णन के विचार में समता नहीं पाते हैं। शंकर के अनुसार यह विश्व केवल एक माया है। राधाकृष्णन का कहना है कि ईश्वर के लिए काल भी सत्य है। क्योंकि इसकी वास्तविकताएँ पहले ईश्वर ही में अपनी योग्यता का ढाँचा तैयार करता है। परन्तु विश्व और

कार्य चूँकि सीमित हैं। अतः उनका अंत निश्चित है।

Absolute and God के भेद

कहते हुए राधाकृष्णन कहते हैं कि विश्व का रचयिता होने के नाते ईश्वर व्यक्तित्वपूर्ण है, परन्तु Absolute व्यक्तित्वपूर्ण नहीं है। वे कहते हैं कि किसी भी व्यक्ति का जीवन तबतक संभव नहीं हो सकता जबतक कि उसका संबंध वातावरण से नहीं होगा। अगर ईश्वर को वह वातावरण प्राप्त नहीं होगा जिसमें वह कार्य करता है तबतक वह व्यक्तित्वपूर्ण नहीं हो सकता। उनका कहना है — "God can only be a creative personality acting on environment which though dependent on God is not God."

राधाकृष्णन कहते हैं कि ईश्वर को रचयिता के रूप में स्वीकार किया जा सकता है क्योंकि वह Absolute की इस संभावना को वास्तविकता का रूप देता है जो वास्तविक नहीं है। वे कहते हैं कि विश्व में हमें जो विभिन्न प्राणियों का अनुभव होता है वह केवल एक ही संभावनाओं की वास्तविकता का रूप है। इस संभावना के अलावे Absolute में अन्य असंख्य संभावनाएँ हैं जिन्हें वास्तविकता का रूप प्राप्त नहीं हुआ है। राधाकृष्णन कहते हैं कि इसप्रकार यह अचेतन ही वह वातावरण है जिसके अनुसार ईश्वर अपना रचनात्मक कार्य करता है। जब यह अचेतन पूर्णतया चेतन में बदल जाता है तब ईश्वर और वातावरण के बीच का भेद खत्म हो जाता है और ईश्वर

Absolute में एकाकार हो जाता है। Absolute तथा God के बीच शायद भेद यह है कि ईश्वर और विश्व के बीच इन्द्रिया संबंध है जबकि परम (Absolute) के साथ ऐसी बात नहीं है। राधाकृष्णन कहते हैं कि ईश्वर जो कि विश्व का रचयिता, रक्षक तथा न्यायकर्ता है, वह Absolute से बिल्कुल असंबंधित नहीं है। मनुष्य के साहज्य के दृष्टिकोण से ईश्वर परम है जब हम परम को इसके वास्तविक सम्भावनाओं के अन्तर्गत सीमित करते हैं तब हमें Absolute का ज्ञान सर्वोच्च बुद्धि, प्रेम पुनीत के रूप में होता है। जब हम सर्वोच्च को विश्व से अलग करके देखते हैं तब इसे Absolute कहते हैं। Absolute ईश्वर का पूर्व-विश्व स्वरूप (Pre-Cosmic nature) है और विश्व संबंधी विचार से ईश्वर Absolute है।

अतः राधाकृष्णन का परम तथा God के बीच का भेद शंकर तथा रामानुज के समान नहीं है। यद्यपि इनके कथन के साथ इसमे बहुत समानता है। जैसे - राधाकृष्णन के अनुसार Absolute विश्वातीत सत्ता है जबकि संपूर्ण सत्य है, जबकि God जगत के विचार से परम है।

राधाकृष्णन कहते हैं कि जब हम अपने सीमित दृष्टिकोण से Absolute को देखेंगे तब हम

हो स्वयं प्रकृति से संबद्ध पायेंगे तब इसका स्वरूप प्रेम होगा क्योंकि प्रेम में हम एकता तथा द्वैतता दोनों पाते हैं। परन्तु जब हम ईश्वर को पूर्णतया प्राप्त कर लेते हैं तथा ईश्वर अपने साध्य को प्राप्त कर लेता है तब ईश्वर और हम दोनों परम (Absolute) में मिल जाते हैं, अर्थात ईश्वर का तभी तक अस्तित्व है, जबतक कि हमारा तथा हमारे तर्क का, है क्योंकि जब दोनों अपने साध्य को प्राप्त कर लेते हैं तब केवल परम (Absolute) ही बच जाता है और प्रेम आनन्द में बदल जाता है जिसमें द्वैत नहीं है।

अत: राधाकृष्णन के Absolute तथा God संबंधी विचार का सार यह है कि Absolute ही मूल सत्य है। ईश्वर एक विशेष दृष्टिकोण से परम है और यह विश्व परम की असंख्य संभावनाओं में से एक संभावना का वास्तविक रूप है।

राधाकृष्णन के अनुसार यह संसार परमतत्व की एक अभिव्यक्ति है। परमतत्व में अनेक संभावनायें पायी जाती हैं और इन्हीं संभावनाओं में से यह संसार एक वास्तविक कारण है। चूंकि परमतत्व वास्तविक है और यह संसार इसकी अभिव्यक्ति है।

अत: राधाकृष्णन इस संसार को भी वास्तविक मानते हैं। यहीं राधाकृष्णन और शंकर के मत में

अन्तर पाया जाता है। जहाँ शंकर इस संसार को ब्रह्म का विरक्त मानते हैं, वहीं राधाकृष्णन ब्रह्म का वास्तविक रूप मानते हैं।

राधाकृष्णन के अनुसार जब परमतत्व की इस काल में अभिव्यक्ति होती है वहीं संसार का आविर्भाव होता है इसका अर्थ यह नहीं होता कि ब्रह्म का सम्पूर्ण अस्तित्व इस संसार में समाप्त हो जाता है।

राधाकृष्णन सर्वेश्वरवादी नहीं हैं बल्कि ये आध्यात्मवादी हैं इन्होंने स्वीकार किया है कि परमतत्व की असंख्य संभावनाओं में से यह संसार कुछ संभावनाओं को व्यक्त करने का एक प्रयास मात्र है। इस संदर्भ में यह भी स्मरण रखना चाहिए कि यद्यपि यह संसार ब्रह्म की वास्तविक अभिव्यक्ति है, लेकिन ब्रह्म के लिए यह आवश्यक नहीं है। इस संसार की सृष्टि क्यों होती है? इस प्रश्न के उत्तर में हम सिर्फ इतना ही कह सकते हैं कि परमतत्व में इच्छा-स्वतंत्र्य (Freedom of will) है और यह संसार इसी का परिणाम है। इस संसार की अभिव्यक्ति से परम तत्व में किस प्रकार का परिवर्तन नहीं आता क्योंकि परमतत्व को संसार के रूप में अभिव्यक्त करना आवश्यक नहीं है। परमतत्व इस संसार का आधार है, क्योंकि इसके अभाव में इसकी सृष्टि नहीं हो सकती है।

उपरोक्त विवेचन

के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि भले ही राधाकृष्णन निरपेक्ष सत्ता और ईश्वर संबंधी विचार को लेकर वेदान्त दर्शन से अत्यधिक प्रभावित दिखाई पड़ते हैं। लेकिन ऐसा नहीं कहा जा सकता है कि उन्होंने वेदान्त दर्शन के विचार को पूर्णरूप से स्वीकार कर लिया है। जहाँ शंकर ने ईश्वर को व्यावहारिक स्तर पर वास्तविक मानकर पारमार्थिक स्तर पर इसे असत्य मान लिया है। वहीं राधाकृष्णन निरपेक्ष सत्ता और ईश्वर के बीच इस प्रकार का मौलिक भेद नहीं मानते हैं। बल्कि इन दोनों को एक ही सर्वोच्च सत्ता के दो पक्षों के रूप में स्वीकार करते हैं।